श्रील भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज को उनकी सौवीं व्यास पूजा पर श्रील गुरुदेव द्वारा पुष्पांजलि

लेख, श्रील भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज

जो व्यक्ति भक्त नही हैं वह व्यास पूजा का पालन नहीं कर सकता है। हृदय से त्रुटिहीन सेवा भगवान एवं गुरूदेव के प्रति एक शुद्ध पुष्पांजलि है।"

श्रील् भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी ठाकुर लिखते हैं:

भक्तिमय शास्त्र गुरुदेव की व्यास पूजा को चार तरीकों में मनाना बताते हैं। 1) गुरु पूजा का पालन करना। 2) उनको हमेशा स्मरण करना। 3) उनकी कृपा को पाने की प्रार्थना करना। 4) उनके गौरव का जप करना। आध्यात्मिक मार्ग की आज्ञा का पालन करने में सबसे बड़ी बाधा यह आती है कि बद्ध जीव गुरु पूजा ढंग से नहीं कर सकते। ना ही उनको याद कर सकते हैं, ना ही कृपा प्रार्थना कर सकते हैं और उनकी जय का जप भी नहीं कर सकते। गुरु और वैष्णव मूलतह सर्वश्रेष्ठ हैं और बुद्धि से परे हैं। परम् पिता परमेश्वर श्रेष्ठ हैं इसलिए उनके भक्त भी श्रेष्ठ हैं।

श्रेष्ठ सत्य प्रकृति से स्वंय दीप्तिमान है। बद्ध जीव कैसे स्वयं दीप्तिमान सत्य को जान सकते

हैं ? इसको समझने के लिए सूर्य का उदाहरण उपयुक्त है। सूर्य स्वयं दीप्तिमान है। इसको देखने के लिए उसका प्रकाश ही सहायक है। रात के समय आप बहुत कोशिश के बाद भी सूर्य नही देखा जा सकता है। सूर्योदय से वह अपनी उपस्थिति का आभास कराता है और अन्य चीजों का भी। पूर्ण शरणागत जीव ही भगवान का आभास एवं दर्शन कर पाते हैं। पूर्ण शरणागति ही भगवत दर्शन का एकमात्र उपाय है।

पूर्ण शरणागति को गीता में श्रेष्ठ, गूढ़ एवं निर्णयात्मक उपदेश माना गया है। श्रीमन् चैतन्य महाप्रभु एवं रायरामानंद के संवाद में शरणागति को गीता में बाह्य रूप दर्शाया है। ऐसा क्यों, क्योंकि एक तरफ श्री कृष्ण

शरणागत जीव को पापमुक्त करने का वचन देते हैं और दूसरी तरफ बद्ध जीव की शरणागति का कोई उल्लेख नहीं है। प्रमाणिक गुरु की शरणागति भी जरूरी है इस प्रकार की प्रक्रिया में। प्रमाणिक गुरु ही एक सच्चे भक्त को इसका अनुभव करा सकते हैं। शुद्धता का ज्ञान एक परंपरा से अवतरित होता है। आगमनात्मक एवं वियोजक ज्ञान का अंतर जबतक समझ नहीं आया तबतक धार्मिक जीवन का आरंभ नहीं होगा।

मेरे पूज्यनीय शिक्षा गुरु परम् पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदंडी स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी महाराज की आविर्भाव तिथि इस साल 24 सितंबर 1998 को मनायी जायेगी। मैं उनकी गौरव गाथा को बताने में असमर्थ हूँ।

उनके साथ आंतरिक होते हुए भी मेरी क्षमता परम् पूज्य श्रीमद् पुरी गोस्वामी महाराज को बखान नहीं कर सकता। मेरे दीक्षा गुरू भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज एवं शिक्षा गुरु भक्ति प्रमोद पुरी महाराज का अपार आशीर्वाद मुझ पर रहा है जब तक वह त्रिदंडी संन्यासी न हुए। मुझे पुरी गोस्वामी महाराज के पूर्व जीवन का कोई भी अनुभव नहीं है। परन्तु मैंने गुरु महाराज एवं उनके श्रेष्ठ गुरु भाईयों से सुना है कि श्रील् भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी ने पुरी गोस्वामी महाराज को श्री चैतन्य मठ के प्रकाशन विभाग में संपादक मंडल में नियुक्त किया था। उसके बाद वह संपादक मंडल के प्रधान बन गये। उनके शुद्ध एवं तीव्र बंगला भाषा का ज्ञान, शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान एवं शास्त्रोक्त धार्मिक पद्धति को वर्णन

करने की विशेषता को सभी सारस्वत वैष्णव सराहते थे।

हमारे गुरु महाराज का उनके प्रति विषेश सम्मान था। पुरी गोस्वामी महाराज श्री चैतन्य गौड़ीय मठ से निकट रूप से आबद्ध थे एवं वह चैतन्य गौड़ीय मठ के सभी आयोजनों में गुरु महाराज के साथ जाते थे। एक बार वह गुरु महाराज के साथ रथ यात्रा के लिए पुरुषोत्तम धाम गये। मैं इस बात से अचंभित था कि वह रथ यात्रा अध्याय, जोकि चैतन्य चरितामृत में उद्धृत है, का पाठ जगन्नाथ मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक करते हुए गये। उन्होंने् भक्ति सिद्धांतों को प्रतिपादित ही नहीं किया वरन् उसका पूर्ण रूप से पूर्ण निष्ठा के साथ उसका पालन भी किया। असाधारण गुण होते हुए भी

उनमें रंच मात्र अहं नहीं था एवं उनकी विनम्रता उनके चरित्र का मुख्य अंग था।

हमने उनकी धार्मिकता का उदाहरण मंदिर में होने वाले विशिष्ट आयोजन जैसे कि मूर्ति स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा आदि को विशेष रूप से सम्पूर्ण विधि से उनके द्वारा संपादित होते हुए देखा है। पचासी वर्ष की अवस्था में भी वह ब्रज मंडल की परिक्रमा, किसी भक्त के कंधों के सहारे पैदल किया करते थे जोकि उनकी एक अद्वितीय प्रतिभा थी। गौड़ीय मठ में शामिल होने के पश्चात मुझे बंगाल में कई स्थानों का परिभ्रमण, उनके साथ करने का मौका मिला। मैं उनके प्रेरणास्पद प्रवचन एवं मधुर कीर्तन से आकर्षित था।

सौवें वर्ष की अवस्था में उनके लिए चलना-फिरना संभव नहीं है और इस बात के लिए सलाह भी नहीं दी जा सकती है। इसके बावजूद विश्व वैष्णव राजसभा के अध्यक्ष होने के कारण उनका आशीर्वाद मठ के लिए एवं सभी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बना रहेगा।

अंत में मैं अपने शिक्षा गुरु परम् पूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदंडी स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज के शुभ आविर्भाव तिथि पूजा के अवसर पर उनके चरण कमलों में कोटिशः साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हुए उनके अहेतु की कृपा प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरे जाने-अनजाने में किये हुए अपराधों को क्षमा करें और अपने अहेतु की कृपा प्रदान करें, जिससे मैं भक्ति भाव से श्री गौरांग

महाप्रभु और श्री श्री राधाकृष्ण की कृपा प्राप्त कर सकूं।

- वैष्णव दासानुदास भक्ति बल्लभ तीर्थ, श्री चैतन्य गौड़ीय मठ, मुख्य कार्यालय, 35, सतीश मुखर्जी रोड, कोलकाता।

www.SrilaGuruudeva.org